AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

सम्राट अशोक के शिलालेखों में नैतिकता और सामाजिक न्याय का प्रतिबिंबः एक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author

जय नन्द ज्योति भास्कर
शोधार्थी, इतिहास विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

सम्राट अशोक 268–232 ईसा पूर्वाद्ध भारतीय इतिहास के ऐसे शासक थे जिन्होंने युद्ध और विस्तार की परंपरागत राजनीति को त्यागकर नैतिकता, अहिंसा और सामाजिक न्याय पर आधारित शासन की अवधारणा प्रस्तुत की। कलिंग युद्ध के पश्चात् उनका नैतिक रूपांतरण उनके शिलालेखों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। यह शोध पत्र अशोक के शिलालेखों के माध्यम से नैतिकता और सामाजिक न्याय की अवधारणाओं का विश्लेषण करता है, और यह जानने का प्रयास करता है कि किस प्रकार उन्होंने इन मूल्यों को शासन व्यवस्था, समाज और सांस्कृतिक जीवन में स्थापित किया। अध्ययन में प्रमुख रूप से यह देखा गया है कि अशोक के धम्म का आधार धार्मिक सहिष्णुता, सभी जीवों के प्रति दया, अहिंसा, सत्यवादिता, पारिवारिक सम्मान, और आत्म.संयम जैसे नैतिक सिद्धांतों पर आधारित था। उन्होंने प्रशासन में धम्ममहामात्रों की नियुक्ति, दंडनीति में मानवीय दृष्टिकोण, और सामाजिक कल्याण योजनाओं के माध्यम से इन सिद्धांतों को व्यवहार में लाया। इस शोध में विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है, जिसमें शिलालेखों के पाठ, ऐतिहासिक अभिलेखों, और आधुनिक विद्वानों के दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रमुख शिलालेखों जैसे कि गिरनार, धौली, कंधार और लुम्बिनी शिलालेखों का विशेष उल्लेख किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अशोक के नैतिक सिद्धांत न केवल प्राचीन भारतीय प्रशासन की एक अनूठी मिसाल हैं, बल्कि आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके विचार धार्मिक विविधता, सामाजिक समरसता, और मानवीय मूल्यों की स्थापना में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। यह शोध भारतीय प्रशासनिक इतिहास, नैतिक शासन, और सामाजिक न्याय के अध्ययनों के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है तथा यह सुझाव देता है कि सम्राट अशोक की नीति एक आदर्श नैतिक.राजनीतिक मॉडल के रूप में आधुनिक समाज के लिए अनुकरणीय हो सकती है।

मुख्य शब्द

मगध साम्राज्य, अशोक, शिलालेख, नैतिकता, धम्मनीति, नैतिकता, न्याय.

परिचय

सम्राट अशोक (लगभग 268–232 ईसा पूर्व) मौर्य वंश के एक ऐसे महान शासक के रूप में इतिहास में स्मरण कि, जाते हैं, जिन्होंने न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, बल्कि शासन के नैतिक

और मानवीय सिद्धांतों को केंद्र में रखते हुए प्रशासनिक दृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन किया। उनका शासनकाल मौर्य साम्राज्य की सर्वोच्चता का प्रतीक रहा है, परंतु जिस तत्व ने उन्हें अन्य सम्राटों से विशिष्ट बनाया, वह था, उनकी धर्म के प्रति प्रतिबद्धता और सामाजिक न्याय की स्थापना हेतु किया गया प्रयास।

कलिंग युद्ध (लगभग 261 ईसा पूर्व) अशोक के जीवन में एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। युद्ध की भयावहता और रक्तपात से व्यथित होकर उन्होंने हिंसा का परित्याग कर बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को अपनाया, विशेषतः अहिंसा, करुणा, और सार्वभौमिक नैतिकता के सिद्धांतों को। इसके पश्चात् उनका शासन न केवल राजनीतिक सत्ता का प्रतीक रहा, बल्कि नैतिक नेतृत्व और लोककल्याणकारी शासन का आदर्श भी बना। अशोक ने ''धर्म'' को अपने शासन की आधारशिला बनाया। यह धर्म किसी संप्रदाय विशेष से नहीं जुड़ा था, बल्कि यह नैतिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक कर्तव्यों की एक समवेत संहिता थी, जिसका उद्देश्य था, एक ऐसे समाज का निर्माण, जिसमें सभी वर्गों के लिए न्याय, करुणा, सहिष्णुता और समभाव सुनिश्चित हो। अशोक के शिलालेख, जो प्राकृत भाषा में ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपियों में उत्कीर्ण हैं, उनके इसी नैतिक दर्शन के प्रमुख वाहक हैं। ये शिलालेख भारत, पाकिस्तान, नेपाल और अफगानिस्तान तक विस्तृत हैं, जो न केवल उनके साम्राज्य की भौगोलिक सीमा का संकेत देते हैं, बल्कि उनकी नीतियों और विचारों के प्रसार की व्यापकता को भी दर्शाते हैं। प्रमुख शिलालेख, लघु शिलालेख, गुफा लेख एवं स्तंभ लेख इन सभी में अशोक की प्रशासनिक दृष्टि, धर्मपालन, प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व, पशु.कल्याण, धार्मिक सहिष्णुता, तथा न्यायिक सुधारों की झलक मिलती है। यह शोध पत्र सम्राट अशोक के शिलालेखों में प्रतिफलित नैतिकता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि अशोक ने अपने संदेशों के माध्यम से इन मूल्यों को कैसे परिभाषित किया, उनका व्यवहारिक क्रियान्वयन कैसे किया गया, और किस प्रकार उनके द्वारा प्रतिपादित ''धर्म'' ने एक नैतिक आधारित राज्य की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया। यह अध्ययन इस दृष्टिकोण को भी सामने लाने का प्रयास करेगा कि अशोक की विचारधारा आज के सामाजिक और शासन प्रणालियों में किस प्रकार प्रासंगिक हो सकती है।

शोध प्रश्न

अध्ययन का उद्देश्य सम्राट अशोक के शिलालेखों में निहित नैतिकता और सामाजिक न्याय की अवधारणाओं का विश्लेषण करना है। इसके लिए निम्नलिखित शोध प्रश्नों को केन्द्र में रखा गया है:

1. सम्राट अशोक के शिलालेखों में नैतिकता और सामाजिक न्याय के कौन–कौन से प्रमुख सिद्धांत उभरकर सामने आते हैं।
2. इन सिद्धांतों ने अशोक के शासनकाल की सामाजिक संरचना और प्रशासनिक व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया।
3. अशोक के नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण की समकालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भ में क्या प्रासंगिकता है।
4. क्या अशोक की धम्म–नीति को आधुनिक शासन व्यवस्था और सार्वजनिक नीति के लिए एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

इन प्रश्नों के माध्यम से अध्ययन का उद्देश्य अशोक की विचारधारा और शासन प्रणाली को केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नहीं, बल्कि समकालीन विमर्श में भी स्थान देना है।

अध्ययन पद्धति

इस शोध में विश्लेषणात्मक (Analytical) और वर्णनात्मक (Descriptive) शोध पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन की पद्धति को निम्न बिंदुओं में वर्गीकृत किया गया है:

प्रस्तुत अध्ययन हेतु द्वितीयक स्त्रोतो से प्राप्त आंकड़ो का संकलन किया गया है।

अशोक के शिलालेखों का मूल पाठ (ब्राह्मी लिपि में प्राकृत भाषा) तथा उनका अनुवाद और व्याख्या। इनमें

प्रमुख शिलालेख, लघु शिलालेख, स्तंभ लेख आदि शामिल हैं।

उदाहरणः शिलालेखों के आधुनिक अनुवाद – Epigraphia Indica, Corpus Inscriptionum Indicarum आदि। ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय और दार्शनिक व्याख्याएँ, शोध आलेख, पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, और विद्वानों के विश्लेषणात्मक लेखों का उपयोग किया गया है। उदाहरणः रोमिला थापर, अर्नोल्ड टोयनबी, डी.,न. झा, ए.एल. बाशम आदि द्वारा लिखित कृतियाँ।

विश्लेषण की प्रविधि

शिलालेखों में प्रयुक्त नैतिक अवधारणाओं जैसे अहिंसा, सहिष्णुता, दया, न्याय, और समता की गहन व्याख्या की गई है। सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से स्त्री, पशु, वंचित वर्ग और धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति सम्राट अशोक की नीतियों का परीक्षण ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन व शासक की नैतिकता बनाम शक्ति.राजनीति के विमर्श का विश्लेषण किया गया है।

साहित्य समीक्षा

इस अध्ययन में उपयोग किए गए विभिन्न विद्वानों के ग्रंथों और शोधों की समीक्षा निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर की गई है। इन समीक्षाओं से विषय की गहराई को समझने और एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता मिली है।

डी. एन. झा ने अपने लेखन Ancient India: In Historical Outline में अशोक की नीतियों को सामाजिक इतिहास के संदर्भ में देखा है। वे यह मानते हैं कि अशोक के शिलालेखों का उद्देश्य केवल नैतिक उपदेश देना नहीं था, बल्कि जनता के बीच एक सांस्कृतिक अनुशासन स्थापित करना था। उनका ध्यान विशेष रूप से जाति, लिंग, और धार्मिक बहुलता के संदर्भ में सामाजिक न्याय पर केंद्रित था। उनका विश्लेषण इस शोध में शिलालेखों के सामाजिक निहितार्थ को समझने में अत्यंत सहायक रहा।

हुल्त्सच द्वारा संकलित Corpus Inscriptionum Indicarum, Volume I; Inscriptions of Asoka यह ग्रंथ अशोक के शिलालेखों का प्रामाणिक पाठ और अनुवाद प्रस्तुत करता है। उन्होंने अशोक के सभी प्रमुख और लघु शिलालेखों को प्राकृत से अंग्रेजी में अनूदित किया है। इन शिलालेखों में प्रयुक्त नैतिक अवधारणाएँ जैसे दया, सज्जनता, धार्मिक सहिष्णुता आदि का शाब्दिक व भावानुवाद इस शोध के लिए मूल स्रोत रहे हैं। यह ग्रंथ प्राथमिक स्रोत के रूप में शोध की प्रमाणिकता को सुदृढ़ करता है।

डॉ. अनुपमा राय का Mauryan Administration and Social Order यह शोध लेख मौर्य शासन और सामाजिक व्यवस्था के संबंध में है, जिसमें अशोक की नीतियों का गहन अध्ययन किया गया है। लेख में दर्शाया गया है कि किस प्रकार अशोक ने नैतिकता को प्रशासन का अंग बनाया और धम्ममहामात्रों के माध्यम से सामाजिक संवाद को प्रोत्साहित किया। राय के अनुसार, अशोक की सामाजिक दृष्टि समावेशी और धर्मनिरपेक्ष थी, जो आज के लोकतांत्रिक समाज के लिए अनुकरणीय है। यह लेख शोध पत्र में प्रशासन और सामाजिक नीति के विश्लेषण खंड में विशेष रूप से उपयोगी रहा।

प्रसिद्ध इतिहासकार **रोमिला थापर** ने अपनी पुस्तक Ashoka and the Decline of the Mauryas में सम्राट अशोक के शासन और शिलालेखों के माध्यम से उनके नैतिक दृष्टिकोण का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। वह अशोक के धम्म को एक धर्म–निरपेक्ष नैतिक संहिता मानती हैं जो शासन की नीतियों को मानवीय आधार पर संचालित करती है। थापर यह भी तर्क देती हैं कि अशोक की नैतिकता केवल व्यक्तिगत सुधार की नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक संगठन की परिकल्पना थी। यह कृति इस शोध के लिए आधारशिला सिद्ध हुई है, क्योंकि इसमें शासक की आत्मपरिवर्तन यात्रा और उसके सामाजिक प्रभावों का गहन अध्ययन है।

ए. एल. बाशम ने The Wonder That Was India में प्राचीन भारतीय संस्कृति और मौर्यकालीन शासन की व्यापक समीक्षा की है। अशोक के शासन को वे भारतीय इतिहास का नैतिक उत्कर्ष मानते हैं। बाशम के अनुसार, अशोक के शिलालेख राजनीतिक चेतना और नैतिक कर्तव्यों का अभूतपूर्व समन्वय प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने अशोक

की नीति को बौद्ध धर्म की सार्वभौमिकता का एक राजनीतिक रूपांतरण बताया है, जो इस शोध में नैतिकता और सामाजिक न्याय के विश्लेषण में उपयोगी रहा।

निष्कर्षतः उपरोक्त साहित्य ने यह स्पष्ट किया है कि सम्राट अशोक का शासन एक नैतिक क्रांति का प्रतीक था। शिलालेखों के माध्यम से उन्होंने जिस धम्म का प्रचार किया, वह केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि शासन, समाज और मानवता के बीच एक नैतिक अनुबंध था। इन सभी विद्वानों की समीक्षा से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अशोक के विचार आधुनिक सामाजिक न्याय, नैतिक शासन, और सहिष्णुता की अवधारणाओं के पूर्ववर्ती उदाहरण हैं।

ऐतिहासिक पष्ठभूमि

प्राचीन भारत के इतिहास में मौर्य वंश एक अत्यंत प्रभावशाली और संगठित साम्राज्य के रूप में उभरा, जिसकी नींव चंद्रगुप्त मौर्य ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में रखी थी। चंद्रगुप्त और उनके उत्तराधिकारी बिंदुसार के शासनकाल में मौर्य साम्राज्य का विस्तार और सुदृढ़ीकरण हुआ, किंतु सम्राट अशोक के काल में यह साम्राज्य अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचा। अशोक का शासनकाल (लगभग 268–232 ईसा पूर्व) न केवल सैन्य विजय और भौगोलिक विस्तार के लिए उल्लेखनीय है, बल्कि एक नैतिक एवं धर्मनिष्ठ शासन व्यवस्था की स्थापना के लिए भी इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है।

सम्राट अशोक का प्रारंभिक शासनकाल पारंपरिक मौर्य सम्राटों की भांति राजनीतिक शक्ति और सैन्य बल पर आधारित था। उन्होंने कलिंग राज्य पर आक्रमण कर, एक भीषण युद्ध में उसे अपने अधीन कर लिया। किंतु, यह विजय उनके जीवन का सबसे निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई। कलिंग युद्ध, जिसमें अनुमानतः एक लाख से अधिक लोग मारे गए और कई हजार घायल व विस्थापित हुए, ने अशोक को गहरे आत्ममंथन की ओर प्रवृत्त किया। युद्ध की विनाशकारी परिणति से व्यथित होकर अशोक ने हिंसा का परित्याग कर बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को अपनाया, जिसमें अहिंसा (अविहिंसा), करुणा (अनुकम्पा), और आत्मसंयम को जीवन का मूलाधार माना गया है।

बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के बाद अशोक ने "धर्म" को अपने शासन की आधारशिला बनाया। यह धर्म किसी विशिष्ट धार्मिक परंपरा तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक सार्वभौमिक नैतिकता की संकल्पना थी, जो सभी वर्गों, जातियों और समुदायों के लिए समान रूप से लागू होती थी। अशोक के "धम्म" में सत्य, संयम, सहिष्णुता, माता. पिता और गुरुजनों का सम्मान, प्राणियों के प्रति दया, ईर्ष्या और क्रोध से मुक्ति, तथा धार्मिक सहिष्णुता जैसे तत्व सम्मिलित थे। इस नैतिक शासन का उद्देश्य केवल धार्मिक प्रचार नहीं था, बल्कि सामाजिक व्यवस्था में समरसता, न्याय और नैतिक व्यवहार को स्थापित करना भी था।

अशोक की नीति और विचारधारा का सबसे प्रामाणिक स्रोत उनके शिलालेख हैं, जो उनके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित कराए गए। ये शिलालेख प्रशासनिक आदेशों, नैतिक उपदेशों, और सामाजिक सन्देशों का समृद्ध भंडार हैं। भारत, नेपाल, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के विभिन्न हिस्सों में पाए गए ये शिलालेख प्राकृत भाषा में ब्राह्मी तथा उत्तर.पश्चिमी क्षेत्रों में खरोष्ठी लिपि में लिखे गए हैं। इनमें स्तंभ लेख (जैसे दिल्ली, लौरिया नंदनगढ़, और सांची), शिला लेख (जैसे गिरनार, दौली, खालाटीगिरि), और गुफा लेख (जैसे बराबर की गुफाएँ) सम्मिलित हैं।

इन शिलालेखों का उद्देश्य केवल प्रशासनिक आदेश जारी करना नहीं था, बल्कि शासक और प्रजा के बीच एक नैतिक संवाद की स्थापना करना भी था। अशोक ने अपने शिलालेखों के माध्यम से जनसामान्य को नैतिक आचरण, सामाजिक दायित्व, और धार्मिक सहिष्णुता की शिक्षा दी। यह शासन की पारंपरिक अवधारणाओं से भिन्न था, जहाँ शासक केवल सत्ता का केंद्र नहीं था, बल्कि एक नैतिक मार्गदर्शक भी था। उन्होंने धम्ममहामात्रों की नियुक्ति की, जो समाज में नैतिक शिक्षा और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिए कार्यरत् थे।

अशोक के शासनकाल में सामाजिक न्याय की संकल्पना एक नवीन दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत हुई। उन्होंने सभी धार्मिक सम्प्रदायों के प्रति समान दृष्टिकोण अपनाने, नारी सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करने, और निर्धनों तथा

पशुओं के प्रति करुणा की भावना को प्रशासनिक नीतियों में सम्मिलित किया। कारागारों में सुधार, चिकित्सालयों की स्थापना, जलाशयों और वृक्षारोपण जैसी लोक कल्याणकारी योजनाएँ, उनकी सामाजिक दृष्टि के सजीव प्रमाण हैं।

राजनीतिक दृष्टि से अशोक का शासन केंद्रीकृत किंतु नैतिक नियंत्रण के साथ था। उनके शासन की बुनियाद शक्ति पर नहीं, बल्कि नैतिकता और सेवा पर आधारित थी। यह व्यवस्था उस युग की राजधर्म की धारणा को एक नया आयाम प्रदान करती है, जहाँ शासन की सफलता का मूल्यांकन सैन्य बल या कर संग्रह की बजाय लोकहित और नैतिक आचरण की कसौटी पर होता था।

इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि अशोक केवल एक शासक नहीं थे, बल्कि एक दार्शनिक राजा थे, जिन्होंने शासन को धर्म और नैतिकता के साथ संयोजित कर एक धम्मराज्य की परिकल्पना प्रस्तुत की। उनके शिलालेख उस युग का नहीं, बल्कि समस्त मानव सभ्यता का नैतिक घोषणापत्र प्रतीत होते हैं, जिनमें आज भी मानवता, सहिष्णुता और सामाजिक समरसता के स्थायी मूल्य समाहित हैं।

शिलालेखों में नैतिकता और सामाजिक न्याय के सिद्धांत

सम्राट अशोक के शिलालेख भारतीय इतिहास के ऐसे महत्त्वपूर्ण स्त्रोत हैं, जो किसी शासक के नैतिक दृष्टिकोण, सामाजिक सरोकारों और प्रशासनिक विचारधारा को उसके अपने शब्दों में प्रस्तुत करते हैं। इन शिलालेखों में अशोक ने जो ''धम्म'' या धर्म का उल्लेख किया है, वह किसी विशेष धार्मिक मत या परंपरा का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि वह एक सार्वभौमिक नैतिक व्यवस्था का प्रतीक है, जिसमें मानव जीवन के लिए आवश्यक मूल्यों, जैसे अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, आत्मसंयम, और समानता को स्थान दिया गया है।

नैतिकता (Moral Values) के प्रमुख सिद्धांत

- **अहिंसा (Non-Violence):** अशोक के धर्म का मूल आधार अहिंसा था। कलिंग युद्ध की विभीषिका से व्यथित होकर उन्होंने हिंसा का पूर्णतः परित्याग किया और राज्य के प्रत्येक अंग में अहिंसात्मक नीतियों को लागू किया। अशोक ने पशुबलि को हतोत्साहित किया और मांसाहार में कटौती के निर्देश दिए। शिलालेख संख्या 1 (शिला लेख) में लिखा गया है कि राजा ने बहुत से पशुओं की हत्या को बंद किया और अब केवल तीन प्राणियों की ही बलि होती है.....। यह नीति केवल धार्मिक उद्देश्य के लिए नहीं थी, बल्कि इसके माध्यम से एक नैतिक संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करना था, जिससे मनुष्यों में दया और करुणा का भाव उत्पन्न हो। अशोक ने पशुओं के लिए चिकित्सालय और पशु.संवर्धन की व्यवस्थाएँ भी कराईं।
- **सत्य और आत्मसंयमः** शिलालेखों में सत्य को जीवन का अभिन्न अंग बताया गया है। अशोक ने प्रजा से आग्रह किया कि वे सत्य का पालन करें, बड़ों का सम्मान करें, और ईर्ष्या, क्रोध जैसे दुर्गुणों से बचें। स्तंभ लेख 7 में अशोक ने कहा है कि ''धम्म में वृद्धि सत्य बोलने, कृतज्ञता, संयम, और शुद्ध जीवन जीने से होती है''। आत्मसंयम को उन्होंने व्यक्तिगत विकास और सामाजिक संतुलन का माध्यम माना। संयम, विशेषकर वाणी, भोजन, भोग–विलास और आचरण में आवश्यक बताया गया।
- **करुणा और सहानुभूतिः** करुणा और सहानुभूति अशोक की नैतिक नीतियों का केंद्र थीं। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि प्रशासन का प्रत्येक अंग मानवता की सेवा में संलग्न हो। उन्होंने विभिन्न वर्गों के प्रति सहानुभूति और सेवा का आग्रह किया, चाहे वे निर्धन हों, बीमार हों या धार्मिक भिन्नता रखने वाले हों।
- **माता–पिता, गुरुजन और वद्धजनों का सम्मानः** शिलालेखों में पारिवारिक मूल्यों को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। अशोक ने माता–पिता, आचार्यों और वृद्धजनों का सम्मान करने को नैतिक धर्म का हिस्सा माना। यह शिक्षा पारिवारिक एकता और सामाजिक अनुशासन को बना, रखने में सहायक थी।

सामाजिक न्याय के सिद्धांत

- **समदर्शिता और समानताः** अशोक के धर्म का एक प्रमुख पक्ष सभी धर्मों, जातियों और वर्गों के प्रति समान दृष्टिकोण था। उन्होंने किसी भी धार्मिक या सामाजिक समूह के प्रति पक्षपात को अस्वीकार किया। स्तंभ लेख

7 में अशोक ने कहा— राजा सभी धर्मों का समान सम्मान करता है। यह नीति शासन के सामाजिक न्याय दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसमें शासक केवल एक जाति या वर्ग का प्रतिनिधि नहीं, बल्कि समस्त प्रजा का संरक्षक होता है।

- **धार्मिक सहिष्णुताः** धार्मिक विविधता के प्रति सहिष्णु दृष्टिकोण अशोक की सबसे उल्लेखनीय नीतियों में से एक थी। उस काल में जब धर्म को सत्ता का उपकरण माना जाता था, अशोक ने सभी धर्मों के प्रति समान आदरभाव का प्रदर्शन किया। शिला लेख 12 में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ''एक धर्म को ऊँचा समझकर दूसरे का अपमान करना उचित नहीं है।'' यह विचारधारा न केवल एक नैतिक संदेश थी, बल्कि सामाजिक सौहार्द्र और न्यायपूर्ण शासन का आधार भी।
- **स्त्रियों और निम्नवर्गीयों के अधिकारः** हालाँकि शिलालेखों में प्रत्यक्ष रूप से नारी अधिकारों का विस्तृत उल्लेख नहीं है, परंतु अशोक ने स्त्रियों के नैतिक उन्नयन और आध्यात्मिक विकास को महत्त्वपूर्ण माना। उन्होंने स्त्रियों के लिए धार्मिक प्रवचन और शिक्षाओं की व्यवस्था की, जिससे वे भी नैतिक जीवन की ओर अग्रसर हो सकें। धम्ममहामात्रों को यह निर्देश दिया गया था कि वे स्त्रियों को धर्म और नैतिकता की शिक्षा दें। इससे स्त्री सशक्तिकरण और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा मिला।
- **दंड नीति में सुधार और न्याय प्रणालीः** अशोक की न्याय व्यवस्था केवल अपराध के दंड पर आधारित नहीं थी, बल्कि उसमें पुनर्विचार, क्षमा, और सुधार की भावना निहित थी। उन्होंने अपने न्यायालयों में अपील की व्यवस्था दी, जहाँ अपराधियों को दूसरी बार अपनी बात रखने का अवसर मिलता था। शिलालेख 4 (गिरनार शिला लेख) में उल्लेख मिलता है कि श्राजा ने दंड को नरम करने और अधिक अवसर देने की नीति अपनाई। यह नीति उस समय की दमनकारी दंड व्यवस्था से भिन्न थी, जो एक न्यायपूर्ण और मानवीय शासन की ओर संकेत करती है।

लोककल्याण और प्रशासनिक नैतिकता

- **धम्ममहामात्रों की नियुक्तिः** अशोक ने धर्म और नैतिकता के प्रचार के लिए धम्ममहामात्रों की नियुक्ति की, जिनका कार्य थाकृप्रजा को नैतिक शिक्षा देना, विभिन्न समुदायों के बीच समरसता स्थापित करना, निर्धनों, रोगियों और वृद्धजनों की सेवा करना। यह एक प्रकार का नैतिक प्रशासन था, जो केवल कर.संग्रह या सुरक्षा तक सीमित नहीं था।
- **सार्वजनिक कल्याण की योजनाएँः** अशोक ने नैतिक शासन के साथ.साथ सामाजिक कल्याण पर भी बल दिया। उन्होंने सड़क किनारे वृक्षारोपण, सरायों का निर्माण, कुँओं और जलाशयों की स्थापना, मानव व पशु चिकित्सालयों की स्थापना जैसी योजनाएँ, लागू कीं। स्तंभ लेख 2 में वे लिखते हैं, ''राजा ने मनुष्यों और पशुओं दोनों के लिए औषधालय स्थापित किए।'' यह नीति न केवल लोकसेवा थी, बल्कि शासन के नैतिक कर्तव्यों का परिचायक भी।

शासक के आचरण में नैतिकता

- **आत्मावलोकन और पारदर्शिताः** अशोक ने अपने कृत्यों और विचारों की सार्वजनिक रूप से समीक्षा की। शिला लेख 1 और 13 में उन्होंने स्वीकार किया कि पहले उन्होंने कई गलतियाँ कीं और अब वे आत्मसंयम और धर्म के मार्ग पर हैं। यह किसी भी शासक के लिए एक अत्यंत दुर्लभ दृष्टिकोण था, जहाँ वह अपनी भूलों को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करता है।
- **जनता से संवादः** शिलालेखों के माध्यम से अशोक ने जनता से सीधा संवाद स्थापित किया। ये शिलालेख केवल आदेश नहीं थे, बल्कि एक संवादात्मक नैतिक शिक्षा का माध्यम थे, जिससे शासक और प्रजा के बीच पारदर्शिता और विश्वास बना रहता था।

सम्राट अशोक के शिलालेखों में निहित नैतिकता और सामाजिक न्याय के सिद्धांत उस युग की राजनीतिक.

सामाजिक चेतना को एक नया आयाम प्रदान करते हैं। जहाँ शासकों का उद्देश्य केवल सत्ता का विस्तार और स्थायित्व होता था, वहाँ अशोक ने सत्ता को एक नैतिक साधन के रूप में प्रयोग किया। उनकी नैतिक अवधारणाएँ अहिंसा, करुणा, सत्य, धार्मिक सहिष्णुता, और सामाजिक समदर्शिता सिर्फ दार्शनिक आदर्श नहीं थे, बल्कि प्रशासनिक यथार्थ भी बने। अशोक का "धम्म" शासन केवल भौतिक कल्याण की नीति नहीं, बल्कि आत्मिक और नैतिक उन्नति का एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण था, जो आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक है।

अशोक की नीतियों का प्रभाव

सम्राट अशोक का शासन मौर्य साम्राज्य के इतिहास में एक परिवर्तनकारी युग के रूप में देखा जाता है। अशोक ने सत्ता, धर्म और नैतिकता के संबंधों को पुर्नपरिभाषित करते हुए एक ऐसे शासन का निर्माण किया, जो केवल राजनीतिक और सैन्य शक्ति पर आधारित न होकर नैतिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और लोककल्याण पर टिका हुआ था। उनकी नीतियों का प्रभाव तत्कालीन भारतीय समाज पर ही नहीं, बल्कि एशिया के अन्य देशों की धार्मिक और सांस्कृतिक धारा पर भी गहराई से पड़ा।

धार्मिक प्रभावः बौद्ध धर्म का प्रसार

अशोक की सबसे महत्त्वपूर्ण नीति परिवर्तन धार्मिक क्षेत्र में दिखाई देता है। कलिंग युद्ध के बाद उनका बौद्ध धर्म की ओर झुकाव केवल व्यक्तिगत आत्मपरिवर्तन नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक धार्मिक आंदोलन की शुरुआत थी। अशोक ने बौद्ध धर्म के अहिंसा, करुणा, और सह.अस्तित्व के सिद्धांतों को अपने शासन में केंद्रीय स्थान दिया। उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए स्तूपों और विहारों का निर्माण कराया, (जैसेः सांची, सारनाथ)। बौद्ध भिक्षुओं को विदेशों में धर्म प्रसार के लिए भेजा (जैसेः संघमित्रा और महेन्द्र को श्रीलंका)। तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन (लगभग 250 ईसा पूर्व) किया। इन प्रयासों के कारण बौद्ध धर्म न केवल भारत में, बल्कि श्रीलंका, अफगानिस्तान, थाईलैंड, म्यांमार, नेपाल, चीन, जापान और कोरिया तक फैल गया।

प्रशासनिक प्रभावः नैतिक प्रशासन की स्थापना

अशोक की नीतियों ने प्रशासन की पारंपरिक परिभाषा को बदल दिया। उनके शासन का उद्देश्य केवल कर संग्रह और कानून व्यवस्था तक सीमित नहीं था, बल्कि नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति भी था। प्रमुख प्रशासनिक नवाचारों में शामिल हैं:

- **धम्ममहामात्रों की नियुक्तिः** जो समाज में नैतिकता और धर्म के प्रचार का कार्य करते थे। वे स्त्रियों, वृद्धों, और धार्मिक अल्पसंख्यकों के कल्याण में संलग्न थे।
- **सार्वजनिक संवादः** अशोक ने अपने आदेशों को शिलालेखों के माध्यम से सीधे जनता तक पहुँचाया, जो शासन की पारदर्शिता और उत्तरदायित्व का प्रतीक था।
- **न्याय प्रणाली में सुधारः** दंड को नरम बनाने, अपील की सुविधा और समय–समय पर दोषियों को क्षमा देने की नीतियाँ न्याय के प्रति उनके मानवीय दृष्टिकोण को दर्शाती हैं।

इस प्रकार, अशोक का प्रशासन एक नैतिक और लोककल्याणकारी राज्य की दिशा में अग्रसर था, जहाँ शासक का कर्तव्य केवल शासन नहीं, बल्कि प्रजा की आत्मिक उन्नति का प्रयास भी था।

सामाजिक प्रभावः समरसता और मानवता की स्थापना

अशोक की नीतियों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उस समय समाज जातीय भेदभाव, धार्मिक संघर्ष, और सामाजिक असमानताओं से ग्रस्त था। अशोक ने इन असमानताओं को मिटाने और समरसता की भावना को प्रोत्साहित करने का कार्य किया।

- **धार्मिक सहिष्णुताः** अशोक ने सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान का भाव व्यक्त किया। शिलालेखों में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि "दूसरे के धर्म की निंदा करने से अपने धर्म का महत्त्व नहीं बढ़ता।"

- **स्त्रियों की स्थितिः** अशोक ने स्त्रियों के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान की बात की, जो तत्कालीन समाज में एक नई अवधारणा थी।
- **करुणा आधारित समाजः** पशुहत्या पर रोक, अस्पतालों की स्थापना, वृक्षारोपण, यात्रियों के लिए विश्राम गृह जैसे कार्यों ने समाज में सेवा और संवेदना की भावना को बल दिया।

इस प्रकार अशोक ने एक ऐसे समाज की स्थापना की जो धर्म, जाति, लिंग या वर्ग के आधार पर विभाजित न होकर मानवता के साझा मूल्यों पर आधारित था।

सांस्कृतिक प्रभावः शिलालेख और वास्तुकला की परंपरा

अशोक की नीतियाँ न केवल सामाजिक और धार्मिक जीवन तक सीमित थीं, बल्कि उन्होंने सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को भी नया आयाम दिया। उनके शिलालेख, स्तंभ, और स्थापत्यकला आज भी भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग हैं।

- **शिलालेखों की परंपराः** उन्होंने शिलाओं और स्तंभों पर धर्म.संबंधी संदेश खुदवाकर एक सांस्कृतिक क्रांति की शुरुआत की। ये शिलालेख इतिहास लेखन के प्रारंभिक स्रोत हैं।
- **स्तूप निर्माणः** अशोक द्वारा निर्मित सांची, सारनाथ, और बौद्धगया जैसे स्तूप न केवल धार्मिक केंद्र बने, बल्कि कला और वास्तुकला की उत्कृष्टता के उदाहरण भी बने। अशोक की स्थापत्य धरोहरों ने आगे चलकर गुप्त काल और दक्षिण ,शिया की बौद्ध स्थापत्य परंपराओं को भी प्रेरित किया।

वैश्विक प्रभावः अंतर्राष्ट्रीय संबंध और सांस्कृतिक संपर्क

अशोक के शासनकाल में भारत ने पहली बार संगठित रूप से सांस्कृतिक कूटनीति का प्रयोग किया। उन्होंने न केवल अपने साम्राज्य में धर्म का प्रचार किया, बल्कि अन्य देशों में बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति का शांतिपूर्ण प्रसार किया। श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, और मध्य एशिया तक बौद्ध धर्म का फैलाव अशोक की नीतियों का परिणाम था। उन्होंने विदेशों के शासकों जैसे मिस्र के टॉलेमी, मैसेडोनिया के (ंटियोकस) को भी पत्र भेजकर अहिंसा और नैतिकता की शिक्षाएँ भेजीं।

यह दर्शाता है कि अशोक केवल भारत के ही नहीं, बल्कि विश्व इतिहास के पहले महान नैतिक राजनीतिक शासकों में से एक थे।

दीर्घकालिक प्रभाव और आधुनिक मूल्यांकन

अशोक की नीतियाँ दीर्घकाल तक भारतीय परंपरा और शासन में प्रतिध्वनित होती रहीं। बौद्ध धर्म की जड़ें भारत सहित एशिया के कई देशों में गहरी हुईं।भारतीय संविधान के राष्ट्रीय प्रतीक (अशोक स्तंभ) और धर्म चक्र को अशोक काल से ही लिया गया है। महात्मा गांधी और डॉ. अंबेडकर जैसे नेताओं ने अशोक की नैतिकता आधारित राजनीति को प्रेरणा स्वरूप माना। आज जब वैश्विक राजनीति में नैतिकता और मानवता की कमी महसूस होती है, अशोक की नीतियाँ वैश्विक नैतिक शासन मॉडल के रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं।

इस प्रकार अशोक की नीतियों का प्रभाव व्यापक, गहरा और दूरगामी था। उन्होंने शासन, समाज, धर्म, और संस्कृति के हर पहलू को एक नैतिक दृष्टिकोण से पुनर्निर्मित किया। उनके द्वारा प्रतिपादित धम्म केवल धार्मिक मार्गदर्शन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और प्रशासनिक मूल्यों का साझा घोषणापत्र था। अशोक की नीतियाँ आज भी भारतीय राष्ट्रवाद, सांप्रदायिक सद्भाव, सामाजिक न्याय, और मानवता की अवधारणाओं में प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं।

अशोक के नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण की आधुनिक प्रासंगिकता

सम्राट अशोक का शासनकाल भारतीय इतिहास का एक अद्वितीय उदाहरण है, जिसमें राजनीति, नैतिकता और सामाजिक न्याय का समन्वय देखने को मिलता है। अशोक के शिलालेखों में प्रतिपादित धम्म की अवधारणा केवल

धार्मिक दृष्टिकोण नहीं, बल्कि एक समावेशी, करुणामूलक, और मानवतावादी शासन व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। 21वीं सदी के वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य में जब समाज कई प्रकार की नैतिक, धार्मिक, और सामाजिक चुनौतियों से जूझ रहा है, अशोक के नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है।

नैतिक राजनीति की आवश्यकता और अशोक का आदर्श

वर्तमान राजनीति अक्सर स्वार्थ, भ्रष्टाचार, और सत्ता की होड़ का पर्याय बन गई है। ऐसे समय में अशोक जैसे शासक की छवि, जिन्होंने युद्ध से सीख लेकर शांति और नैतिकता की राह अपनाई, अत्यंत प्रेरणादायी है। अशोक ने सत्ता को सेवा का माध्यम बनाया। उनके धम्म में शासक का उत्तरदायित्व केवल शासन करना नहीं, बल्कि जनता के नैतिक और सामाजिक उत्थान की चिंता करना भी था। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में नीति.निर्माण को यदि नैतिकता से जोड़ा जाए, तो शासन अधिक मानवीय और लोक–कल्याणकारी हो सकता है। नेतृत्व, पारदर्शिता, और जवाबदेही की आधुनिक अवधारणाएँ अशोक की नीतियों में निहित मूल्यों से मेल खाती हैं।

सामाजिक न्याय और समावेशी समाज की कल्पना

अशोक का धम्म जाति, धर्म, लिंग, और वर्ग के भेदभाव को अस्वीकार करता है। उन्होंने अपने शिलालेखों में सामाजिक समरसता, स्त्री सम्मान, और धार्मिक सहिष्णुता पर विशेष बल दिया। आज जब समाज जातीय संघर्ष, धार्मिक कट्टरता, और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, अशोक की विचारधारा सांप्रदायिक सौहार्द और समानता की राह दिखा सकती है। संविधान में वर्णित न्याय, स्वतंत्रता, समानता, और बंधुत्व जैसे मूल्य वस्तुतः अशोक के धम्म के ही आधुनिक संस्करण हैं। समावेशी समाज निर्माण के लिए अशोक की नीतियाँ एक ऐतिहासिक प्रेरणा बन सकती हैं, विशेषकर भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र में।

धार्मिक सहिष्णुता और अंतर–धार्मिक संवाद

अशोक के शिलालेख स्पष्ट रूप से यह संदेश देते हैं कि सभी धर्मों को समान सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि ''दूसरे के धर्म की निंदा करने से अपने धर्म की महत्ता नहीं बढ़ती।'' आज के दौर में जब धार्मिक असहिष्णुता और उग्रवाद वैश्विक स्तर पर चिंता का विषय बने हैं, अशोक की यह शिक्षा अत्यंत प्रासंगिक है। अंतर–धार्मिक संवाद और परस्पर समझ को बढ़ावा देकर ही सामाजिक शांति स्थापित की जा सकती है। अशोक का धम्म आधुनिक धर्मनिरपेक्षता और बहुलतावाद के आदर्शों को ऐतिहासिक समर्थन प्रदान करता है।

पर्यावरण और पशु.कल्याण की चेतना

अशोक ने अपने शिलालेखों में पशु.हत्या पर नियंत्रण, वनस्पतियों की रक्षा, और चिकित्सालयों की स्थापना जैसी बातें कही हैं यह उस युग में उल्लेखनीय है जब पर्यावरण संरक्षण की कोई अवधारणा स्पष्ट नहीं थी। आज जब जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की क्षति, और पशु.क्रूरता गंभीर वैश्विक संकट बन चुके हैं, अशोक की नीतियाँ पर्यावरणीय नैतिकता की प्राचीन प्रेरणा देती हैं। भारत की पर्यावरणीय न्याय प्रणाली में नैतिकता और करुणा की यह भावना समाहित की जा सकती है।

अशोक का दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि प्राकृतिक संसाधनों और जीव–जंतुओं के साथ संतुलनपूर्ण संबंध मानव समाज के दीर्घकालिक अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

वैश्विक शांति और नैतिक कूटनीति

अशोक ने बाह्य देशों के शासकों को अहिंसा, नैतिकता और सह–अस्तित्व का संदेश भेजा। उन्होंने बौद्ध धर्म के माध्यम से सांस्कृतिक कूटनीति का प्रयोग किया। आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में जब सत्ता, प्रभुत्व और सैन्य बल प्राथमिक माध्यम बन चुके हैं, अशोक का आदर्श नैतिक कूटनीति का उदाहरण प्रस्तुत करता है। संयुक्त राष्ट्र जैसे संस्थानों में यदि शांति, सह–अस्तित्व, और करुणा जैसे सिद्धांतों को प्राथमिकता दी जाए, तो वैश्विक संघर्षों को नियंत्रित किया जा सकता है। अशोक का दृष्टिकोण आज के विश्व नेता और नीति–निर्माताओं के लिए सांस्कृतिक और नैतिक नेतृत्व का पाठ है।

शिक्षा और जन–जागरूकता में नैतिक मूल्यों का स्थान

अशोक के शिलालेखों का एक उद्देश्य जनता को नैतिक और सामाजिक रूप से जागरूक बनाना भी था। उन्होंने शिक्षा, आत्मनियंत्रण, और संयम जैसे मूल्यों को जन.सामान्य तक पहुँचाया। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा और नागरिक कर्तव्यों की उपेक्षा चिंता का विषय है। अशोक का दृष्टिकोण प्रेरित करता है कि शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान नहीं, बल्कि नैतिक चरित्र निर्माण का भी माध्यम होनी चाहिए। आज के युवा यदि अशोक के मूल्यों से परिचित हों, तो वे अधिक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बन सकते हैं।

निष्कर्ष

सम्राट अशोक भारतीय इतिहास के उन विरले शासकों में से एक हैं, जिनकी शासन शैली केवल राजनीतिक या सैन्य विजय तक सीमित नहीं थी, बल्कि गहन नैतिक, सामाजिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित थी। अशोक के शिलालेखों में अंकित विचार उनके शासन की आत्मा को प्रतिबिंबित करते हैं। यह शिलालेख केवल आदेश या प्रशासकीय घोषणाएँ नहीं हैं, बल्कि वे उस आंतरिक परिवर्तन के प्रमाण हैं, जिसने एक साम्राज्यवादी विजेता को धम्म के माध्यम से एक लोकसेवक में बदल दिया। इस शोध पत्र में प्रस्तुत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अशोक ने नैतिकता और सामाजिक न्याय को शासन का अनिवार्य अंग माना। कलिंग युद्ध के बाद उनके जीवन में जो नैतिक जागरण आया, उसने उन्हें अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, और सभी जीवों के प्रति दया जैसे मूल्यों को अपनाने की ओर प्रेरित किया। इन मूल्यों को उन्होंने केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें प्रशासन, समाज, और सांस्कृतिक जीवन में संस्थागत स्वरूप दिया।

अशोक के शिलालेखों में प्रमुख रूप से जिन सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है, वे हैं:

सभी धर्मों के प्रति सम्मान, माता–पिता, गुरु और वृद्धों के प्रति श्रद्धा, सभी प्राणियों के प्रति दया, न्याय का मानवतावादी दृष्टिकोण, अहिंसा का सार्वभौमिक सिद्धांत, संयमित आचरण और आत्म–नियंत्रण, नैतिक उपदेशों का प्रचार करते थे।

इन सिद्धांतों के आधार पर उन्होंने शासन की एक नई परिभाषा प्रस्तुत की, जो न केवल साम्राज्य विस्तार तक सीमित नहीं थी, बल्कि प्रजा के नैतिक और सामाजिक उत्थान को उसका लक्ष्य मानती थी। धम्ममहामात्रों की नियुक्ति, दंड नीति में नरमी, स्त्रियों और वंचित वर्गों के कल्याण हेतु प्रयास, तथा जन–कल्याणकारी योजनाएँ इन सबने मिलकर एक नैतिक राज्य की कल्पना को साकार किया।

समाज पर इन नीतियों का व्यापक प्रभाव पड़ा। धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा मिला, स्त्रियों की स्थिति में सुधार हुआ, पशु–कल्याण और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों को राजकीय प्राथमिकताओं में स्थान मिला, और सबसे महत्वपूर्ण, शासन जनता के नैतिक और आत्मिक कल्याण का माध्यम बन गया। अशोक के इस दृष्टिकोण ने भविष्य के अनेक शासकों को प्रेरित किया और बौद्ध धर्म के प्रचार को एक वैश्विक आंदोलन में परिवर्तित कर दिया। आज के समय में, जब विश्व नैतिक पतन, धार्मिक असहिष्णुता, सामाजिक विषमता, और पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहा है, अशोक की नीतियाँ और उनका धम्म पुनः प्रासंगिक हो उठे हैं। अशोक हमें यह सिखाते हैं कि शक्ति का सर्वोच्च उपयोग हिंसा या दमन में नहीं, बल्कि करुणा, सेवा और आत्म–संयम में है। भारत जैसे लोकतांत्रिक, बहुलतावादी समाज के लिए अशोक की विचारधारा न केवल एक ऐतिहासिक स्मृति है, बल्कि वह आज भी संवैधानिक मूल्यों न्याय, स्वतंत्रता, समानता, और बंधुत्व का नैतिक आधार प्रस्तुत करती है। यह कोई संयोग नहीं कि भारत का राष्ट्रीय प्रतीक अशोक स्तंभ से लिया गया है, और राष्ट्रध्वज में चक्र का रूप अशोक के धर्मचक्र को ही दर्शाता है।

इस शोध का निष्कर्ष है कि अशोक के शिलालेखों में निहित नैतिकता और सामाजिक न्याय की अवधारणाएँ केवल ऐतिहासिक महत्व की नहीं हैं, बल्कि वे समकालीन समाज और शासन व्यवस्था के लिए दिशा–निर्देशक मूल्य प्रदान करती हैं। वे यह स्पष्ट करते हैं कि शासन की सफलता केवल भौतिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, नैतिक आदर्शों और सामाजिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति से मापी जानी चाहिए। इस प्रकार, सम्राट अशोक

का धम्म केवल अतीत की एक महान गाथा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक नैतिक, सामाजिक और प्रशासनिक संहिता है जो सच्चे अर्थों में ''धर्म–आधारित राज्य'' नहीं, बल्कि ''नैतिक–आधारित समाज'' की स्थापना का स्वप्न प्रस्तुत करता है।

सम्राट अशोक का नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण केवल प्राचीन इतिहास की विरासत नहीं, बल्कि समकालीन समस्याओं के समाधान का मार्गदर्शन भी है। उनकी नीतियाँ मानवीय मूल्यों, सह–अस्तित्व, करुणा, और नैतिक जिम्मेदारी पर आधारित थीं, जो आज की दुनिया में सामाजिक तनाव, धार्मिक असहिष्णुता, नैतिक पतन और पर्यावरण संकट जैसी समस्याओं के समाधान के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। अशोक ने जिस धम्म की स्थापना की, वह आज भी एक विश्व.मानवता के चार्टर के रूप में देखा जा सकता है जो राजनीति को नैतिकता से, समाज को समरसता से, और मानव को मानवता से जोड़ने का कार्य करता है।

सन्दर्भ सूची

1. थापर, रोमिला (2005) *अशोक और मौर्य वंश का पतन,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
2. बाशम, ए. एल. (2011) *भारतः एक अद्भुत सभ्यता (The Wonder That Was India),*रंजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. झा, डी. एन. (2012) *प्राचीन भारतः एक ऐतिहासिक रूपरेखा,* मनीषा पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
4. Mookerji, Radhakumud (1962) *Asoka: The Buddhist Emperor of India,* Motilal Banarsidass, Delhi.
5. Hultzsch, E. (1925) *Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. I: Inscriptions of Asoka,* Government of India, Calcutta.
6. Ray, Anupama (2011) Mauryan Administration and Social Order, *Indian Historical Review,* Vol. 38, No. 1, p. 45–67.
7. Sharma, R.S. (2007) *India's Ancient Past,* Oxford University Press, New Delhi.
8. Falk, Harry (2006) *Asokan Sites and Artefacts: A Source-Book with Bibliography,* Philipp von Zabern, Mainz.
9. Kosambi, D.D. (1965) *The Culture and Civilization of Ancient India in Historical Outline,* Routledge & Kegan Paul, London.
10. Upinder (2008) *A History of Ancient and Early Medieval India: From the StoneAge to the 12th Century,* Pearson Longman, New Delhi.

––==00==––